वसंत भाग 2

‘मिठाईवाला’

(मॉड्यूल–1/2)

पाठ के बारे में भाग– 1

यह कहानी 'भगवती प्रसाद बाजपेयी' जी ने लिखी है जिसमे उन्होंने एक पिता का बच्चों के प्रति प्रेमभाव को दर्शाया है। किस तरह एक पिता अपने बच्चों को खोने के बाद अन्य बच्चों में उस खुशी की तलाश करता है।

'मिठाईवाला' एक बहुत ही मार्मिक कहानी है। जिसमें मुख्यरूप से मिठाई बेचने वाला व्यक्ति ही पहले बच्चों की खुशियों के लिए खिलौने, बाँसुरी जैसी वस्तुएँ सस्ते में बेचता है जिससे सभी बच्चे खुशी–खुशी खरीद लेते हैं। बच्चों के माता–पिता खिलौनेवाले या बाँसुरीवाले के इतने सस्ते दाम पर चीजें बेचने पर हैरान होते हैं। कई लोग तो कोसते भी है कि वह सबको लूटता है।

वास्तव में वह अपनी हानि करके भी सबकुछ सस्ते में देता है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह अपने पत्नी और बच्चों को खो चुका था। बच्चों को चीजें सस्ते दाम पर बेचकर वह उनके चेहरे पर आई खुशियों से खुश होता था। वह अपने बच्चे की कमी को महसूस करता था और हर बच्चे में अपने बच्चे को ढूंढता था।

वह गाना गाकर, बाँसुरी बजाकर खिलौने बेचता था इसलिए सभी बच्चे उसके आने को समझ जाते थे और भीड़ जमाकर बारी बारी से चीजें खरीदते थे और सब उससे उसके बच्चे की तरह प्रेम करते थे।

खिलौनेवाला

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।" इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किंतु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुननेवाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अंतर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता। बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोलभाव करने लगते। पूछते इछका दाम क्या है? औल इछका? औल इछका?

शब्दार्थ- स्वर= आवाज, ढंग= प्रकार, अस्थिर= जो रुके नहीं, स्नेहाभिसिक्त= स्नेह से भरपूर, उद्यान= बगीचा।

खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं–नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने–कूदने लगते और तब फिर खिलौनेवाला उसी प्रकार गाकर कहता बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला। सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गलीभर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचता और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे– चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया तो बोला– मेंला घोला कैछा छुंदल ऐ! मुन्नू बोला– औल देखो, मेला कैछा छुंदल ऐ! दोनों अपने हाथी–घोड़े लेकर घरभर में उछलने लगे।

शब्दार्थ– हिलोर= लहर, मादक= मनमोहक।

इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अंत में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा- "अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए हैं?" मुन्नू बोला- "दो पैसे में। खिलौनेवाला दे गया ऐ।" रोहिणी सोचने लगी- इतने सस्ते कैसे दे गया है? कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है! एक जरा सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार करने की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती!

छह महीने बाद- नगरभर में दो-चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे- भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है।

शब्दार्थ- निरखती= देखती, उस्ताद= कुशल/काबिल।

बाँसुरीवाला

मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है, सो भी दो-दो पैसे में। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा? मेहनत भी तो न आती होगी! एक व्यक्ति ने पूछ लिया- कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा! "उत्तर मिला- उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा। दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।" वही तो नहीं जो पहले खिलौने बेचा करता था? "क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था?" हाँ, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था। "तो वही होगा। पर भई, है वह एक उस्ताद।" प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक, मृदुलस्वर सुनाई पड़ता- बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला।

शब्दार्थ- साफा= सिर की पगड़ी, मृदुल स्वर= मीठा स्वर।

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन–ही–मन कहा– खिलौनेवाला भी इसी तरह गा–गाकर खिलौने बेचा करता था। रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई– जरा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू–मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं। "विजय बाबू एक समाचार–पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाजे पर आकर मुरलीवाले से बोले– क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?" किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते–हाँफते हुए बच्चों का झुंड आ पहुँचा।

शब्दार्थ– स्मरण= याद, सोथनी= पाजामा, झुंड= समूह।

एक स्वर से सब बोल उठे– अम बी लेंदे मुल्ली और अम वी लेंदे मुल्ली। मुरलीवाला हर्ष–गद्गद हो उठा। बोला– सबको देंगे भैया! लेकिन जरा रुको, ठहरो, एक–एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं और हैं भी इस समय मेरे पास एक–दो नहीं, पूरी सत्तावन। . . . हाँ, बाबू जी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं! . . . दीं तो वैसे तीन–तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो–दो पैसे में ही दे दूँगा। "विजय बाबू भीतर–बाहर दोनों रूपों में मुसकरा दिए। मन–ही–मन कहने लगे– कैसा है! देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले– तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो–दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही उपर लाद रहे हो।"

शब्दार्थ– सत्तावन= संख्या/57, एहसान= बोझ, बोझा= भार।

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला– आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है! यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं– दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबू जी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरली नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हजार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं। "विजय बाबू बोले– अच्छा, मुझे ज्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।" दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियाँ बेचता रहा! उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसंद करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

शब्दार्थ– अप्रतिभ= उदास, लागत= कीमत, दस्तूर= नियम।

"यह बड़ी अच्छी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैये, तुमको वही देंगे। ये लो। ...तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा, वही लो। ...ले आए पैसे? अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से यह निकाल रखी थी...! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते हैं बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे...। दुअन्नी है? तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब? ...मिल गए पैसे? देखो, मैंने तरकीब बताई! अच्छा अब तो किसी को नहीं लेना है? सब ले चुके? तुम्हारी माँ के पास पैसे नहीं हैं? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।" इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

शब्दार्थ- दुअन्नी= दो आने या साढ़े बारह पैसे, तरकीब= तरीका।

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करनेवाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है! भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराए, सो थोड़ा! इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा- बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला! "रोहिणी इसे सुनकर मन-ही-मन कहने लगी- और स्वर कैसा मीठा है इसका! बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने-के-महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे-धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

शब्दार्थ- अनुभव= जानकारी/तजुर्बा, फेरीवाला= घूम-घूम कर सामान बेचने वाला व्यक्ति, सौदा= वस्तु/सामग्री।

धन्यवाद